अध्याय 21

नृत्यकारों का जीवन परिचय

अच्छन महाराज

मूल नाम – पंडित जगन्नाथ प्रसाद

जन्म – 1883 गांव लगुहा, सुल्तानपुर (उ.प्र)

मृत्यु – 11 मई सन् 1947 को (लखनऊ)।

शैली / घराना – लखनऊ घराना

गुरू – पिता कालिकाप्रसाद और ताऊ बिन्दादीन जी से कत्थक नृत्य की शिक्षा छः वर्ष की अल्पायु से ही शुरू कर दी गई।गायन की शिक्षा उस्ताद मिंया जान, उस्ताद अमीर खां, उस्ताद काले खां एवं गोरे खां द्वारा प्राप्त की।

नृत्यगत विशेषता – ताल और लय के साथ घुँघरूओं पर अद्भुत अधिकार था। तत्कार को द्रुतगति में स्पष्ट रूप में प्रदर्शित करने में माहिर थे।

शिष्य वर्ग – लच्छु महाराज, शम्भु महाराज, बिरजू महाराज

इनका अच्छा स्वभाव होने के कारण "अच्छे भैया" के नाम से पुकारते थे। धीरे–धीरे अच्छे भैया से "अच्छन महाराज" हो गये। कत्थक नृत्य जगत में इसी नाम से ख्याति प्राप्त की। बचपन से ही नृत्य सीखने के लिए कठोर साधना व अभ्यास आपकी प्रकृति में था। नौ वर्ष की अवस्था में तो 10–12 घंटे का अभ्यास करते थे। अभ्यास के समय जब पैरों से पसीना और खून बहने लगता था तब पैर फिसल न जाये इसके लिए वे खून पसीने पर रेत (बालू) डलवा देते थे, लेकिन तत्कार का अभ्यास रोकते नहीं थे। अनका अभ्यास और तपस्या वर्षों चलती रही। जवानी तक पहुँचते–पहुँचते उनकी तैयारी अपने आप में बेजोड़ थी। पैरों की तैयारी और चक्कर लेने में इनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता था। लय के अन्दर मात्राओं के उलट–फेर का जवाब नहीं था। उनके समकालीन विद्वान उन्हें "लय का बादशाह" नाम से भी पुकारते थे।जिस वस्तु में भी उन्हें लयकारी के गुण दिखाई देते, उसमें वे रूचि लेते और आनन्द के साथ उसका उपभोग करते थे। रेलगाड़ी, मालगाड़ी, तन्दरूस्त और मरियल घोड़ों की चाल, तांगा तथा इक्का आदि की चाल वे बड़े मनोयोग से देखते और आनन्द लेते थे। कोई क्षण ऐसा न जाता था, जब वे एक नई लय में डुबे हुए नजर न आते हो।तबला भी बहुत अच्छा और तैयारी के साथ बजाते थे।

बचपन में दुबले–पतले थे, लेकिन आयु बढ़ने के साथ शरीर स्थूल हो गया। मृत्यु होने के समय तक इतना स्थूल शरीर होने पर भी नृत्य कर लेते थे, जिसे देखकर लोग आश्चर्य करते थे।अच्छन महाराज अचकन, ढीला पाजामा और टोपी पहनते थे। हाथ में छड़ी रखते थे। प्रातः साढ़े चार बजे उठकर नित्य कर्म के बाद पूजा–पाठ में लग जाते। उनका नियम कभी टूटता नहीं था। उनकी तीन पुत्रियाँ व

एक पुत्र थे। पुत्र जिसकी प्रसिद्धि बिरजू महाराज के नाम से विश्व विख्यात है।अच्छन महाराज के अपने दोनों छोटे भाइयों, एवं पुत्र के अतिरिक्त अन्य सैंकडों शिष्य हैं।

पंडित गोपीकृष्ण

नाम – पंडित गोपीकृष्ण

जन्म – 22 अगस्त सन् 1935 (कोलकाता)

मृत्यु – 18 फरवरी सन् 1994 (मुंबई)

माता – तारा बाई

शैली / घराना – बनारस घराना

गुरू – सुखदेव मिश्र (नाना) शम्भु महाराज (कत्थक), गोविन्दराज पिल्लई (भरतनाट्यम) माता तारा बाई तथा पिता द्वारा

पंडित गोपीकृष्ण की माता तारा बाई गायन कला में दक्ष थी। इनके नाना सुखदेव महाराज नेपाल दरबार में संगीतज्ञ थे। सुखदेव महाराज ने अपनी पुत्रियाँ अलकनन्दा, सितारा,तारा तथा पुत्र पांडे महाराज और चौबे महाराज सभी सदस्यों को नृत्य संगीत में पारंगत किया। बचपन में गोपीकृष्ण बम्बई में रहे। स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद कलकता चले गये। कोलकाता में पिता द्वारा कत्थक नृत्य की शिक्षा प्राप्त की। बम्बई वापस आने पर उन्होंने फिल्मों में नृत्य का कार्य किया। फिल्म 'झनक–झनक पायल बाजे' से सर्वाधिक ख्याति मिली। इस फिल्म में नायक–नर्तक थे। आपकी प्रसिद्धि इस फिल्म से उच्चतम शिखर पर पहुँच गई। फिल्मों में भी नृत्य निर्देशन का कार्य करते थे। उन्होंने नृत्य में नवीन तत्त्वों का समावेश किया जो नृत के अन्तर्गत आते हैं। गोपीकृष्ण परम्पराओं के अनुकरण में विश्वास नहीं करते थे। उनके नृत्य में कथकलि व भरतनाट्यम के तत्वों का समावेश महत्त्वपूर्ण है।

15 वर्ष की आयु में उन्हें 'नटराज' की उपाधि से सम्मानित किया गया। वे नर्तक, अभिनेता व नृत्य निर्देशक थे। 'नटेश्वर नृत्य कला मंदिर' एवं 'नटेश्वर भवन नृत्य अकादमी' की स्थापना की। लगातार 9 घंटे 20 मिनट तक नृत्य करके रिकार्ड कायम किया।

पंडित कुन्दनलाल गंगानी

नाम – पंडित कुन्दनलाल गंगानी

जन्म – सन् 1926 सुजानगढ़ (चूरू)

मृत्यु – 16 जुलाई सन् 1984 में दिल्ली में।

पिता – गणेशीलाल गंगानी

गुरू – नारायणप्रसाद, सुन्दरप्रसाद, पं. शिवनारायण (गायन), हजारी लाल (तबला)

घराना – जयपुर घराना

शिष्यवर्ग – स्वर्णलता, पारो, जुबीन (फिल्मी अभिनेत्रियाँ), राजेन्द्र गंगानी, प्रेरणा श्री माली

इनकी शिक्षा–दीक्षा मुख्यतः मामा नारायण प्रसाद द्वारा हुई। नारायण प्रसाद रायगढ़ में थे, तभी कुन्दनलाल उनके साथ चले गये। आप मध्यप्रदेश तथा बिहार में भी पाँच वर्ष रहे। बम्बई में भी 15 वर्ष तक नृत्य की शिक्षा दी। बड़ौदा विश्वविद्यालय के नृत्य विभाग में कत्थक–निर्देशक के पद पर सन् 1953 तक कार्य किया। जयपुर घराने के प्रसिद्ध नर्त्तक हनुमान प्रसाद रिश्ते में आपके नाना थे। तबले की शिक्षा चाचा हजारीलाल से और गायन में पंडित शिवनारायण से प्राप्त की। 13 वर्ष की अवस्था से ही आप सार्वजनिक प्रदर्शन करने लगे।

दुर्लभचित्र–मदनलाल,कुंदनलाल,सुंदरलाल

जोधपुर के राष्ट्रीय कला मण्डल और जयपुर में भी नृत्य का प्रशिक्षण दिया। दिल्ली के कत्थक केन्द्र में नृत्य गुरू के पद पर 1970 से 1984 तक कार्य किया।

महत्त्वपूर्ण – गुरू कुंदनलाल गंगानी के नृत्य में तांडव व लास्य का सम्मिश्रण व अभिनय की प्रधानता थी, उन्होंने विलंबित लय में नवीन गतों, परन, तिहाई, आदि की रचनाएँ की। शिक्षण व प्रदर्शन दोनों में ही आपका योगदान, जयपुर घराने की कीर्त्ति को नवीन दिशाएँ देता रहेगा।

नृत्याचार्य पंडित जयलाल

नाम – पंडित जयलाल

जन्म – सन् 1885 में (बसंत पंचमी), चुरू जिले के एक गांव में

मृत्यु – 19 मई 1945 को कलकत्ता में

पिता – पं. चुन्नीलाल जी

गुरू – पिता चुन्नीलालजी, चाचा दुर्गालालजी, सूखेखां, बिन्दादीन महाराज, उस्ताद जीवन खां (तबला)

घराना – जयपुर घराना

विशेषता – रामगोपाल, जयकुमारी, कार्त्तिकराम, कल्याणदास, सुन्दरप्रसाद, गौरीशंकर, हीरालाल, अनुजराम, फिरतूदास, बर्मनलाल

जयपुर घराने के प्रमुखतम कलाकारों में पंडित जयलाल की प्रसिद्धि थी। जयपुर–दरबार के बाद आपका सम्बन्ध, जोधपुर, सीकरी, नेपाल, रायगढ़, तथा मेहर के दरबारों में भी था। आपके पुत्र रामगोपाल व पुत्री जयकुमारी ने कलकत्ते में जयपुर घराने के कत्थक नृत्य का अच्छा प्रसार किया। नर्त्तक के साथ–साथ आप योग्य संगीतज्ञ, कुशल तबला वादक व पखावज वादक भी थे।

तबले की विधिवत शिक्षा शेखावटी के उस्ताद तबला वादक जीवन खाँ से प्राप्त की। आप तबला वादन में भी पारंगत थे।

मुख्य बिन्दु

- अच्छन महाराज की नृत्यशिक्षा पिता कालका प्रसाद व बिंदादीन महाराज से हुई।
- अच्छन महाराज को लय का बादशाह कहा जाता था
- पं. गोपीकृष्ण ने फिल्मों में नृत्य, अभिनय व नृत्य निर्देशन द्वारा कत्थक नृत्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की। मात्र 15 वर्ष की आयु में 'नटराज' उपाधि से सम्मानित हुए।
- पं. गोपीकृष्ण ने परंपरा के बजाय नवीन अन्वेषण को अपने नृत्य में स्थान दिया, भारत सरकार द्वारा 1975 में पद्म श्री से सम्मानित किए गए।
- गुरू कुंदन लाल गंगानी नृत्य की प्रमुख शिक्षा पं. नारायण प्रसाद के सानिध्य में प्राप्त की।
- नृत्य प्रदर्शन के अलावा तबला वादन में भी अत्यंत कुशल थे।
- कुंदन लाल गंगानी ने कथक केन्द्र– नई दिल्ली में नृत्य गुरू पद पर रहे।
- पं. जयलाल द्वारा कथक में तबले के बोलों की रचना, उनकी प्रमुख देन हैं।
- जयपुर घराने के प्रमुख स्तंभ पं. जयलाल माने जाते हैं। उनके पुत्र व पुत्री रामगोपाल व जयकुमारी ने उनकी परंपरा को आगे बढ़ाया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'नटराज' उपाधि से सम्मानित नृत्यकार कौन थे ?
   (अ) अच्छन महाराज (ब) गोपीकृष्ण (स) कुंदन लाल गंगानी (द) पं. जयलाल
2. अच्छन महाराज का मूल नाम क्या था ?
   (अ) जगन्नाथ प्रसाद (ब) बैजनाथ प्रसाद (स) सुंदर प्रसाद (द) नारायण प्रसाद
3. अच्छन महाराज के पुत्र कौन है ?
   (अ) लच्छू महाराज (ब) शंभू महाराज (स) बिंदादीन महाराज (द) बिरजू महाराज
4. मुंबई में "नटेश्वर नृत्य कला मंदिर" की स्थापना किसने की।
   (अ) बिरजू महाराज (ब) गोपीकृष्ण (स) पं. जयलाल (द) कुंदन लाल गंगानी
5. प्रसिद्ध कत्थक नृत्यकार रामगोपाल एवं जयकुमारी के पिता कौन थे ?
   (अ) पं. कुंदन लाल गंगानी (ब) पं. अच्छन महाराज (स) पं. जयलाल (द) गोपीकृष्ण
6. निम्न में से जयपुर घराने का कत्थक नृत्यकार है ।
   (अ) अच्छन महाराज (ब) गोपीकृष्ण (स) कुंदन लाल गंगानी (द) बिरजू महाराज

उत्तरमाला– (1) ब (2) अ (3) स (4) ब (5) स (6) स

लघुउत्तर प्रश्न

1. पं. अच्छन महाराज की नृत्य साधना प्रक्रिया का उदाहरण दीजिए।
2. पं. गोपीकृष्ण के नृत्य की विशेषताओं को लिखिए।
3. पं. जयलाल जयपुर घराने के आधार स्तंभ है, समझाइये।
4. पं. कुंदनलाल गंगानी पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. पाठ्यक्रम में वर्णित नृत्यकारों के जन्म–मृत्यु वर्ष, नृत्य गुरू व घराने के नाम लिखिए।

अभ्यास बिन्दु

1. उपरोक्त नृत्यकारों के चित्र एकत्रित कर उनके जीवन संबंधी अन्य प्रेरक घटनाओं का संग्रह करें।